७. भोलाराम का जीव

– हरिशंकर परसाई

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :-

१. स्वर्ग या नरक में निवास स्थान 'अलॉट' करने वाले कौन हैं ?

उत्तर: धर्मराज (यमराज) ।

२. भोलाराम के जीव ने कितने दिनों पहले देह त्यागी ?

उत्तर: पाँच दिन पहले ।

३. भोलाराम का जीव किसे चकमा दे गया ?

उत्तर: यमदूत को ।

४. यमदूत ने सारा ब्रह्माण्ड किसकी खोज में छान डाला ?

उत्तर: भोलाराम के जीव की ।

५. भोलाराम किस शहर का निवासी था ?

उत्तर: जबलपुर का ।

६. भोलाराम को पाँच साल से क्या नहीं मिला ?

उत्तर: पेंशन नहीं मिली ।

७. नारद जी भोलाराम की पत्नी से विदा लेकर कहाँ पहुँचे ?

उत्तर: सरकारी दफ़्तर पहुँचे ।

८. भोलाराम ने दरख्वास्त पर क्या नहीं रखा था?

उत्तर: वज़न नहीं रखा था ।

९. बड़े साहब के कमरे के बाहर कौन ऊँघ रहा था ?

उत्तर: चपरासी ।

१०. बड़े साहब की लड़की क्या सीखती है?

उत्तर: गाना–बजाना ।

११. नारद क्या छिनते देख घबराये ?

उत्तर: अपनी वीणा ।

Scanned with CamScanner

१२. फ़ाइल में से किसकी आवाज़ आयी ?

उत्तर: भोलाराम की आवाज़ ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

१. चित्रगुप्त ने धर्मराज से क्या कहा ?

उत्तर: धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे । उनके सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार - बार थूक से पन्ने पलट, रिजिस्टर पर रिजिस्टर देख रहे थे । गलती पकड़ में ही नहीं आ रही थी । आखिर उन्होंने रिजिस्टर खीझकर बंद किया और बोले कि महराज रिकार्ड सब, ठीक है । भोलराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा । चित्रगुप्त ने धर्मराज को यह भी बताया कि भोलाराम के जीव को लानेवाला यमदूत भी लापता है ।

२. यमदूत ने हाथ जोड़कर चित्रगुप्त से क्या विनती की ?

उत्तर: यमदूत हाथ जोड़कर चित्रगुप्त से बोला कि दयानिधान मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया । आज तक मैं ने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया । पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलराम की देह को त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरंभ की । नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु -तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरी चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया । इन पाँच दिन में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उनका कहीं पता नहीं चला ।

३. नरक में निवास-स्थान की समस्या कैसे हल हुई ?

उत्तर: नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये थे । कई इमारतों के ठेकेदार भी आये थे, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं थीं । बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये थे, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवार्षीय योजनाओं का पैसा खाया था । ओवर-सीयर थे, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भर कर पैसा हड़पा था, जो कभी काम पर गये ही नहीं थे । ऐसे कई लोग मिलकर बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी । इस प्रकार नरक में निवास-स्थान की समस्या हल हुई ।

४. भोलाराम का परिचय दीजिए ।

उत्तर: भोलारम जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक टूटे-फूटे मकान में परिवार समेत रहता था । उसकी पत्नी, दो बेटे और एक बेटी के साथ । उम्र लगभग साठ साल ।

Scanned with CamScanner

यह एक सरकारी नौकर था और पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया, इसलिए मकान –मालिक उसे निकालना चाहता था। पाँच साल से पेंशन नहीं मिली थी। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया।

५. भोलाराम की पत्नी ने नारद से भोलाराम के संबंध में क्या कहा ?

उत्तर: भोलाराम की पत्नी ने नारद से भोलाराम के संबंध में कहा कि उन्हें सिर्फ गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गये, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस–पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गये, फिर बरतन बिके। कुछ नहीं बचा। फ़ाके होने लगे थे। चिंता में घुलते – घुलते और भूखे मरते–मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

६. भोलाराम की पत्नी ने नारद से क्या विनती की ?

उत्तर: भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी, पर यमलोक नहीं पहुँचा। इस मामले से यमदूत, चित्रगुप्त और धर्मराज सब चिंतित थे। नारद, चित्रगुप्त से खबर पाकर उसे ढूँढ़ने निकले। भोलाराम के घर में उनकी पत्नी थी और नारद ने उनसे कुछ पूछ–ताछ की। जब नारद भोलाराम के बारे में सुनकर चलने लगते हैं तब उसकी पत्नी इस प्रकार विनती करती है कि– 'महाराज, आप तो साधु हैं, सिध्द पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाये। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाये'।

७. बड़े साहब ने नारद से दफ़्तरों के रीति–रिवाज़ के बारे में क्या कहा ?

उत्तर: बड़े साहब ने नारद से दफ़्तरों के रीति–रिवाज़ के बारे में कहा कि आप तो वैरागी हैं। दफ़्तरों के रीति रिवाज़ नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान–पुण्य करना पड़ता है। सरकारी पैसों का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ़्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। एक ही बात को बीस बार बीस जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है, उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है। जल्दी भी हो सकती है, मगर वज़न चाहिए। आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है।

८. नारद आखिर भोलाराम का पता कैसे लगाते हैं?

उत्तर: भोलाराम की पत्नी की विनती पर नारद, सरकारी दफ़्तर में जाते हैं और वहाँ बड़े साहब से मिलते हैं। बड़े साहब भोलाराम की फ़ाइल जल्दी निपटाने के लिए दरख्वास्त पर वज़न रखने को कहते हैं। नारद अपनी वीणा ही रख देते हैं। बड़े साहब चपरासी से फ़ाइल लाने के लिए कहते हैं। चपरासी भोलाराम की सौ–डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फ़ाइल लाकर देता है। साहब फ़ाइल

Scanned with CamScanner

पर नाम देखकर निश्चित करने के लिए नारद से नाम पूछते हैं । नारद समझते हैं कि साहब कुछ ऊँचा सुनते हैं । इसलिए ज़ोर से –'भोलाराम' बोलते हैं तब सहसा फ़ाइल में से भोलाराम के जीव की आवाज़ आती है । इस प्रकार नारद आखिर भोलाराम का पता लगा देते हैं ।

III.निम्नलिखित वाक्य किसने-किससे कहे ?

१. 'महाराज, रिकार्ड सब ठीक है' ।

उत्तर: इस वाक्य को चित्रगुप्त ने धर्मराज से कहा ।

२. 'भोलाराम का जीव कहाँ है' ?

उत्तर: इस प्रश्न को चित्रगुप्त ने यमदूत से पूछा ।

३. 'महाराज, मेरी सावधानी में बिलकुल कसर नहीं थी' ।

उत्तर: इस वाक्य को यमदूत ने धर्मराज से कहा ।

४. 'क्यों महाराज, कैसे चिंतित बैठे हैं' ?

उत्तर: इस प्रश्न को नारद ने धर्मराज से पूछा ।

५. 'इनकम होती तो टैक्स होता । भुखमरा था' ।

उत्तर: इस वाक्य को चित्रगुप्त ने नारद से कहा ।

६. 'मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछ-ताछ करनी है' ।

उत्तर: इस वाक्य को नारद ने भोलाराम की बेटी से कहा ।

७. 'गरीबी की बीमारी थी' ।

उत्तर: इस वाक्य को भोलाराम की पत्नी ने नारद से कहा ।

८. 'आप साधु हैं; आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती' ।

उत्तर: इस वाक्य को बाबू ने नारद से कहा ।

IV. ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :

१. 'पर ऐसा कभी नहीं हुआ था' ।

संदर्भ: इस वाक्य को हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है । इस वाक्य को लेखक ने पाठकों से कहा ।

Scanned with CamScanner

विवरण: भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ यमलोक के लिए रवाना भी हुआ पर वहाँ तक नहीं पहुँचा। धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों के कर्म और सिफ़ारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे। इसी संदर्भ में लेखक ने उपरोक्त बातें कहीं।

२. 'आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया'।

संदर्भ: इस वाक्य को हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है। इस वाक्य को यमदूत ने चित्रगुप्त से कहा।

विवरण: भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ उस लोक के लिए रवाना भी हुआ पर वहाँ नहीं पहुँचा। इस बात से धर्मराज और चित्रगुप्त दोनों चिंतित थे। उस वक्त यमदूत बदहवास लौटता है तो चित्रगुप्त चिल्ला उठते हैं। तब यमदूत हाथ जोड़कर कहने लगे कि दयानिधान, मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया।

३. 'इन पाँच दिनों में मैंने सारा बहमाण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला'।

संदर्भ: इस वाक्य को हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है। इस बात को यमदूत ने चित्रगुप्त से कहा।

भोलाराम के जीव को ढूंढ़ने में जो कष्ट हुआ, उसे बताते हुए यमदूत ने इस प्रकार कहा कि पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह को त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरंभ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरी चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। उसी संदर्भ पर यमदूत ने चित्रगुप्त से उपरोक्त बातें कहीं।

४. 'चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया'।

संदर्भ: इस वाक्य को हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है। इस बात को भोलाराम की पत्नी ने नारद से कहा।

विवरण: यमलोक में घटित विचित्र घटना के बारे में सुनकर नारद भोलाराम के जीव को ढूँढ़ते हुए उनकी पत्नी से पूछ-ताछ करने लगते हैं। तब वह कहती है कि पाँच साल हो गये, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गये। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा

Scanned with CamScanner

। इसी संदर्भ में उपरोक्त बातें कहीं गयी हैं ।

५. 'साधु–सन्तों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते' ।

संदर्भ: इस वाक्य को 'हरिशंकर परसाई' द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है । इस वाक्य को बड़े साहब ने नारद से कहा ।

विवरण: बड़े साहब नारद से दफ़्तरों के रीति–रिवाज़ के बारे में कहने लगे कि यह भी एक मंदिर है । यहाँ भी दान पुण्य करना है । पेंशन का केस बीस दफ़्तरों में जाता है । जितनी पेंशन मिलती है, उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है । मगर वज़न चाहिए । जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है । मेरी लड़की गाना–बजाना सीखती है । यह मैं उसे दे दूँगा । इसी संदर्भ में बड़े साहब ने उपरोक्त बातें कहीं ।

६. 'पेंशन का आर्डर आ गया' ?

संदर्भ: इस वाक्य को हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'भोलाराम का जीव' पाठ से लिया गया है । इस प्रश्न को भोलाराम के जीव ने नारद से पूछा ।

विवरण: दफ़्तर में आकर जब नारद ने बड़े साहब से भोलाराम की फ़ाइल के बारे में पूछा तो वज़न के रूप में वीणा रखनी पड़ी । इसके बाद बड़े साहब ने चपरासी से फ़ाइल लाने के लिए कहा । चपरासी सौ–डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फ़ाइल ले आता है । बड़े साहब ने फ़ाइल निकाल कर नारद से नाम पूछा । नारद ने समझा कि साहब कुछ ऊँचा सुनते हैं । इस लिए नारद ने ज़ोर से 'भोलराम' कहा तो सहसा फ़ाइल में से उपरोक्त आवाज़ आयी ।

Scanned with CamScanner